'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal | E-ISSN : 2348-7143
Issue – 286 (B) : हिंदी साहित्य में आदिवासी चेतना
Impact Factor : 6.625 | Peer Reviewed Journal | February-2022

कथाकार संजीव के 'धार' उपन्यास में चित्रित आदिवासी चेतना

प्रा. डॉ. अनिता राजबंशी
स्व. अण्णासाहेब आर. डी. देवरे कला एवं विज्ञान महाविद्यालय,
म्हसदी, तह-साक्री जिला धुलिया.

प्रो. डॉ. अनिता पोपटराव नेरे
शोधनिर्देशक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष, म.स.गा.महाविद्यालय,
मालेगाँव-कैम्प, तह. मालेगांव, जि.नासिक

प्रस्तावना :

21 वीं सदी के वैश्वीकरण के दौर में जहां भारत महासत्ता की ओर दौड़ रहा है संपूर्ण विश्व में भारत ने अपनी एक अलग पहचान बनाई है परंतु दूसरी और जब हम भारत के कुछ ऐसे हिस्सों पर नजर डालते हैं जहां जंगल में निवास करने वाला आदिवासी समाज विज्ञान, सभ्यता और संस्कृति के आधुनिकता से आज भी अनजान है।आदिवासी जनजीवन के संदर्भ में डॉ. गोरखनाथ तिवारी ने लिखा है – "संपूर्ण मनुष्य का एक विभाग उन लोगों का भी है जो सभ्यता की दौड़ में बहुत पीछे छुट गए हैं। उन्हें आदिवासी कहा जाता है।"(1)आदिवासी से हमारा अभिप्राय देश के मूल एवं प्राचीनतम निवासियों से है। आज भारत आर्थिक विकास के पथ पर तेज गति से आगे बढ़ता जा रहा है, इसके बावजूद आज भी समाज का एक वर्ग ऐसा है जो हजारों साल पुरानी परम्पराओं के साथ जी रहा है। भारत के आदिवासी आज भी जंगली परिस्थितयों में किसी तरह से अपना जीवन-यापन कर रहे हैं।

वस्तुतः आदिवासी चिंतन वर्तमान काल की उपज है। आजादी के पश्चात देश के लोगों को अपनी उन्नति और विकास का अवसर मिला जिसमें दलितों तथा अन्य पिछड़ी जाति के लोगों को थोड़ी-बहुत मात्र में विकास का अवसर प्राप्त हुआ, जिसका लाभ उठाकर कुछ लोग उन्नति के शिखर पर पहुचें, किन्तु आधुनिकता के इस दौर में हमारे देश का आदिवासी समाज जैसा जहाँ था वैसा ही वहीं पड़ा है, जो कि गम्भीर चिंतन का विषय बन गया है। यदि कुछ अपवादों को छोड़ दिया जाये तो यह कहना बिलकुल सही होगा की हमारे समाज में सबसे अधिक आधुनिक संसाधनों से वंचित उपेक्षित तथा अभावग्रस्त समाज आदिवासी समाज रहा है।

हम देखते हैं कि आज भी इस पिछड़े वर्ग पर उनके अज्ञान और शिक्षा का लाभ उठाकर उन पर निरंतर अन्याय अत्याचार हो रहा है। वैसे देखा जाए तो भारतीय संस्कृति ,परंपरा को संजोए रखने में महत्वपूर्ण योगदान आदिवासियों का है। किंतु आजादी के 75 साल बाद भी आदिवासी समाज पीड़ित, शोषित, उपेक्षित एवं अभाव पूर्ण जीवन जी रहा है। आदिवासियों को आज भी हाशिए से निकालकर समाज के प्रवाह में लाने में हमें कामयाबी नहीं मिली है। पूंजीपतियों ,ठेकेदार ,पुलिस द्वारा शोषण का दमन चक्र आदिवासियों को घेरे हुए हैं। ज्ञान -वैज्ञानिक दृष्टिकोण, प्रगति और विकास से कोसों दूर आदिवासी अत्यंत दर्दनाक जीवन जीने के लिए बाध्य है। सुदूर जंगलों में प्रकृति के सानिध्य में रहने वाले आदिवासी गरीबी, बेकारी, भुखमरी, अशिक्षा अंधविश्वास से ग्रस्त हैं ।

हिंदी के समकालीन कथा साहित्यकारों में आदिवासियों को केंद्र में रखकर सृजन करने वालों में कथाकार संजीव का योगदान विशेष उल्लेखनीय है। संजीव नए उपन्यासकारों में एक चर्चित नाम है। कथाकार संजीव ने आठवें दशक में कथा साहित्य को नया मोड़ दिया ।उन्होंने अपने कथा साहित्य में दलित, पीड़ित,

Scanned with CamScanner

International Research Fellows Association's

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Special Issue – 286 (B)

हिंदी साहित्य में आदिवासी चेतना

Scanned with CamScanner

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor : 6.625
Issue – 286 (B) : हिंदी साहित्य में आदिवासी चेतना
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
February-2022

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक/लेखिका	पृ.क्र.
०१	'धरती आबा' नाटक में चित्रित आदिवासी चेतना	डॉ. योगिता हिरे, प्रो. डॉ. अनिता नेरे	०७
०२	आदिवासी समाज : वर्तमान दशा और दिशा	डॉ. अशोक जाधव	१३
०३	महादेव टोप्पो की कविताओं में आदिवासी चेतना	प्रो. डॉ जिभाऊ मोरे	१७
०४	हिंदी काव्य विधा में आदिवासी चेतना	डॉ. पूनम बोरसे	२२
०५	हिंदी काव्य में आदिवासी चेतना	डॉ. राजाराम शेवाले	२९
०६	आदिवासी कहानियों में चेतना के स्वर	डॉ. रघुनाथ वाकळे	३३
०७	कवि बृजेश सिंह की ग़ज़लों में अभिव्यक्त आदिवासी चेतना	प्रा.रविंद्र ठाकरे, प्रो. डॉ. अनिता नेरे	३८
०८	आदिवासी विमर्श	प्रा. के. के. बच्छाव	४३
०९	लोक संस्कृति का संवाहक - आदिवासी समाज	डॉ. यशोदा मेहरा	४५
१०	हिंदी काव्य नाटक विधा में आदिवासी चेतना	डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी	४९
११	निर्मला पुतुल की कविताओं में आदिवासी स्त्री विमर्श	प्रा. हंसा बागरे	५२
१२	हिंदी मौखिक इतिहास मे आदिवासी चेतना	डॉ. ज्योती रामोड	५७
१३	राजेंद्र अवस्थी के उपन्यास में आदिवासी विमर्श	डॉ. सीताबाई पवार	६०
१४	हिंदी कविताओं में आदिवासी चेतना	डॉ. योगिता घुमरे	६४
१५	उपन्यास साहित्य में चित्रित आदिवासी जीवन संघर्ष	प्रा. निलेश पाटील	६७
१६	हिंदी साहित्य में आदिवासी चेतना	प्रा. निलेश देशमुख	७०
१७	कथाकार संजीव के 'धार' उपन्यास में चित्रित आदिवासी चेतना	डॉ. अनिता राजबंशी, प्रो. डॉ. अनिता नेरे	७४
१८	आदिवासी समाज और हिंदी नाटक	डॉ. दीपा कुचेकर	७९
१९	हिंदी उपन्यास विधा में आदिवासी चेतना	डॉ. बाबासाहेब रसूल शेख	८५
२०	हिन्दी साहित्य में आदिवासी चेतना	प्रा. जगदीश पाटनवार	८८
२१	२१ वी सदी के हिंदी काव्य में आदिवासी चेतना	डॉ. संदिप देवरे	९१
२२	'मौन घाटी' उपन्यास में आदिवासियों का सामाजिक जीवन	प्रा. हर्षल बच्छाव, प्रो. डॉ. अनिता नेरे	९४
२३	हिंदी काव्य विधा मे आदिवासी चेतना	प्रा. दिपक आहिरे	९७
२४	समकालीन आदिवासी साहित्य में जन चेतना	प्रा. राकेश पगार	१००

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

Scanned with CamScanner

शोषित आदिवासी जीवन के दु:ख -पीड़ा का यथार्थ चित्रण किया है ।संजीव आदिवासी जीवन के सूक्ष्म पहलुओं के ज्ञाता है जिसका परिचय हमें उनके 'धार' उपन्यास में चित्रित आदिवासियों के जीवन से मिलता है।

विषय प्रवेश :

1990 में प्रकाशित संजीव का 'धार' उपन्यास आदिवासी जीवन की गरिमा तथा उपलब्धियों को उजागर करता है। 'धार' उपन्यास में संथाल परगना में कोयले की खानों में काम करने वाले मजदूरों का चित्रण हुआ हैं। उपन्यास के केन्द्र में संथाल परगना का बॉसगड़ा अंचल और आदिवासी हैं। वर्तमान समय में आदिवासी समाज की स्थिति पहले से खराब होती जा रही है। उनसे वह सब कुछ छिनता जा रहा है, जिसे प्राप्त करने का वह हकदार हैं। संजीव के 'धार' उपन्यास में इसका सजीव चित्रण दिखाई देता है, जिसमें संथाल आदिवासी गरीबी तथा बेगारी में जीवन बिताते हैं। शिक्षा सभ्यता आधुनिकता से कोसों दूर होने के कारण परंपरागत व्यवसाय करना ही आदिवासी लोग पसंद करते हैं बाजारीकरण एवं उपभोक्तावाद से भी बिल्कुल अनजान हैं । बुनियादी जरूरतों को पूरा करने की दृष्टि से वे जंगलों पर ही निर्भर है। पर आज हम देखते हैं कि ब्रिटिश शासन काल में सरकार की नीतियों के कारण आदिवासी कृषि व्यवस्था सामंती व्यवस्था में बदलाव आ रहा था आदिवासी कृषि प्रणाली पर आघात होकर गैर आदिवासी लोगों को कृषि के लिए बुलाया गया। इसे आदिवासी लोगों की जमीन जाने लगी इसमें आदिवासी लोगों का शोषण बढा। आदिवासी समाज कभी झूठ-फरेब, चोरी, भीख मांगना जैसे घिनौना काम नहीं करते। अत्यंत सहज ,सरल ,भोले -भाले स्वभाव एवं बाह्य जगत का ज्ञान न होने से तथा अनपढ़ होने के कारण आज उनका आर्थिक शोषण जैसी बड़ी समस्या उनके सामने हाथ बांधे खड़ी है ।उपन्यास में चित्रित संथाल जाति दो वक्त की रोटी के लिए संघर्ष करते नजर आ रहे हैं। वह स्वाभिमानी और इमानदारी से अपना जीवनयापन करना चाहते हैं लेकिन पुलिस, राजनेता, ठेकेदार, जमींदार, गुंडे उन्हें अपने निजी स्वार्थ के कारण उनका दैहिक, मानसिक, आर्थिक शोषण कर गलत काम के लिए कर रहे हैं। फलत: आदिवासी जाति उदरनिर्वाह के लिए गलत काम करने के लिए विवश हैं। 'धार' उपन्यास की मैना एक आदिवासी स्त्री हैं। उपन्यास के प्रारंभ में ही मैना के जेल छूटने का चित्रण किया है। उसके जेल जाने के पीछे बहुत बड़ी साजिश एवं कारण है। अर्थाभाव की समस्या के कारण आदिवासियों को गलत काम करने के लिए विवश होते हैं मैंना कहती है ,"पहले हम चोरी का चीज है नहीं जानता था भी कभी नहीं मांगा। चुगली- दलाली कभी नहीं किया ।इज्जत कभी नहीं बेचा। आज हम यह सब करता है ।आदत पड़ गया है। बल्कि कहे उसके बिना गुजारा नहीं ।"(2)

'धार' उपन्यास में चित्रित संथाल जाति के लोग आय के स्रोत न होने से चोरी छुपे कोयला निकालते थे। इन कोयले खदानों में उन्हें अत्यंत कष्टप्रद स्थिति में काम करना पड़ता है ।कठिन परिश्रम के बावजूद इन लोगों को दो वक्त की रोटी तक के पैसे नहीं मिलते। क्योंकि प्राप्त मजदूरी का कुछ हिस्सा पुलिस, गुंडे ,ठेकेदार, माफियाओं को देना पड़ता है। 'धार 'उपन्यास के पूंजीपति वर्ग के प्रतिनिधि अपने स्वार्थ के लिए मैना के पिता से महेंद्र बावू जमीन लेते हैं ।उस जमीन पर महेंद्र बाबू तेजाब की फैक्ट्री शुरू करते हैं। परिणामत:आदिवासी मजदूरों को काम तो मिलता है लेकिन उनके दैहिक, मानसिक, आर्थिक शोषण किया जाता है ।उन्हें विवश होकर काम करना पड़ता है। अत्यंत कठिन परिश्रम के बावजूद उन्हें भूखा रहना पड़ता है।

उद्द्योगपति महेन्द्र बावू आदिवासी परिवेश में तेजाब का कारखाना शुरू करने से फैक्ट्री के पानी से कुएं, तालाब सब दूषित हो जाते हैं।, अतः आदिवासियों को नई समस्याओं से जूझना पड़ता है। कारखाने से निकलने वाला धुआं और कचरा और गंदे पानी से संपूर्ण आदिवासी परिवेश का वातावरण बिषाक्त हो गया।कारखाने से निकलने वाले कचरे से गांव की खेती बाड़ी कुआं पोखर सब खराब कर दिया ।खेत बंजर हो गए पीने लायक पानी नहीं रहा धुएं के कारण संपूर्ण वातावरण में दूषित वायु फैल गई जिससे आदिवासियों के लिए जानलेवा

Scanned with CamScanner

बनी अतः पूंजीपति वर्ग आदिवासियों के साथ अत्यंत बेरहमी से दुर्व्यवहार करते नजर आते हैं। स्वार्थ के लिए यह लोग इतने अंधे हो गए हैं कि मनुष्य होकर भी दूसरे मनुष्य से अमानवीयता से व्यवहार करते हैं।पूंजीपति धन कमाने के स्वार्थ में आदिवासियों की जमीन तथा जिंदगी को ही इन्होंने बर्बाद नहीं किया बल्की उनके स्वास्थ्य से भी खिलवाड़ किया है। उपन्यास की मैना अपने समाज की हालत को बयाँ करती हुई कहती है – "'खेत-खतार', पेड़, रुख, कुआं, तालाब, हम और हमारा बाल-बच्चा तक आज तेजाब में गल रहा है, भूख में जल रहा है।"(3)

मैना के माध्यम से उपन्यासकार ने वर्तमान कालीन आदिवासियों के जीवन का कड़वा सच प्रस्तुत किया है कि आदिवासी समाज आज किस तरह बेबस जीवन जीने के लिए अभिशप्त है। कभी-कभी पूंजीपतियों का ऐसा दुर्व्यवहार देखने पर ऐसा लगता है जैसे अंग्रेजों ने इन्हें विरासत में निर्दयता, क्रुरता, निष्ठुरता दी हुई है। कारखाने में काम करने वाला मजदूर अपने दर्द को इस प्रकार बयां करता है ,"चार चार महीना का तनखा रोक कर रखा पूरा बांसवाड़ा में जहर घोल दिया ।सबको लंगड़ा ,लूला ,अपाहिज और रोगी बना दिया ।"(4)

अतः इस कथन से ज्ञात होता है कि आदिवासियों को जीवनयापन की समस्या से जूझना पड़ता है पूंजीपतियों के साथ-साथ पुलिस और ठेकेदारों द्वारा भी आदिवासियों का शोषण होता है।पुलिस- पूंजीपति- ठेकेदार इन सबकी जुगलबंदी से भोला-भाला आदिवासी समाज शोषण के घेरे में फंसा हुआ है। पुलिस बिना किसी पूछताछ और छानबीन के आदिवासियों पर अपना रौब जमाते हैं ।आदिवासियों पर अविश्वास दिखा कर उन पर अत्यंत बेरहमी से दुर्व्यवहार करते हैं। 'धार' उपन्यास में आदिवासी समाज अवैध कोयला निकालते हैं कोयला निकालने के लिए पुलिस को कमीशन दिया जाता है।पर एक बार कोयला निकालने की पूरी रकम पुलिस तक न पहुंचने के कारण पुलिस कर्मचारी मंगल को अत्यंत निर्दयता से पिटाई करते हैं।इसके बारे में एक युवक खत लिखकर जानकारी देते हुए कहता है,"धंदा पानी हियापे ठीक नहीं अब हमारा गांव भिखमंगा हो गया है। हियां भीख और पुलिस का दलाली छोड़कर कोई धंधा नहीं।.... चोरी से कोयला काटना का लेकिन पकड़ाए तो खैर नहीं कोई नहीं बचाने आएगा।"(5)

इस प्रकार संजीव ने पुलिस की दोगली नीति का पर्दाफाश किया है एक ओर कोल माफियाओं से अधिक रिश्वत लेकर ट्रक के ट्रक अवैध कोयला ले जाने देती है तो दूसरी और आदिवासियों का उदरनिर्वाह के लिए थोड़ा कोयला ले जाते हैं तो उनके साथ दुर्व्यवहार करते हैं। ठेकेदार भी आदिवासियों का आर्थिक शोषण करते हैं। ठेकेदार सरकार से मिलने वाले कामों का ठेका लेते हैं इस कामों के लिए ठेकेदार आदिवासीयों को कम मजदूरी में अधिक काम करवाते हैं। कितना भी कठिन काम हो यह मजदूर अपनी जान जोखिम में डालकर करते हैं फिर भी ठेकेदारों को उनके प्रति कोई सहानुभूति नहीं है। आलोच्य उपन्यास में ठेकेदार आदिवासियों से अवैध कोयला खनन करवाते हैं।एक दिन कोयला खनन करते समय संथाल आदिवासी फोकल पर जमीन धंसने से मिट्टी का एक ढेला गिर जाता है और वह उसमें फंस जाता है वह ठेकेदार से बचाने की बिनती करता है लेकिन निर्दयी ठेकेदार अत्यंत कठोर स्वर में कहता है"अरे मार दे ।अभी जिंदा ही है साला! मारकर भर दे नून सब जगह।"(6) इससे दिखाई देता है कि ठेकेदार कितने निर्दयी एवं स्वार्थी होते हैं।

आज आदिवासी का हर वर्ग शोषण का शिकार है। ऐसा भी नहीं है कि आदिवासी इस शोषण के प्रति मौन रहते हैं। उनमें भी अब चेतना आयी है, वे भी अब संगठन शक्ति का महत्व पहचानने लगे हैं। संजीव के 'धार' उपन्यास में यही स्थिति अंकित है, जहाँ अविनाश शर्मा तथा मैना खदान में आदिवासियों के साथ काम करते हैं, जिसमें कोयला निकलता है, लेकिन शोषण का सिलसिला यहाँ भी दिखाई देता है।

उपन्यास की मुख्य पात्र मैना पुरूषसत्ताक व्यवस्था को तोड़ती आदिवासी नारी है। उसमें स्त्री सुलभ

Scanned with CamScanner

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal | E-ISSN : 2348-7143
Issue – 286 (B) : हिंदी साहित्य में आदिवासी चेतना | February-2022
Impact Factor : 6.625 | Peer Reviewed Journal

भोगप्रदान पुरुषवादी व्यवस्था से आक्रोश और विद्रोह कूट-कूट कर भरा हुआ है। मैना की अपनी एक जीवन शैली है और अपनी नैतिकता है। वह अपने समाज और बिरादरी वालो की परवाह न करते हुए बिना शादी के मंगर के साथ रहती है। ।

संथालो की इस बांसगाडा बस्ती में सभी ओर दरिद्रता, भुखमरी, बेकारी है जिससे बेहाल होकर लोग चोरी से रात में कोयला काटकर उसे बेचकर अपनी जीविका चलाते हैं। इनमें से अधिकतर लोग यहाँ के मिल मालिक, पूंजीपतियों के गुलाम हैं। उनके पास खुद के बारे के सोचने के लिए समय ही नहीं है। सभी को यहाँ की अर्थ और समाज व्यवस्था ने लूला-लंगड़ा और कमज़ोर बनाया है। अगर कोई सचेत होकर इस क्रूर व्यवस्था से संघर्ष करने की क्षमता और साहस रखता है, तो वह मैना ही है। हैदर मामा उसके बारे में कहता है, "ई लंगड़ा-लूला बीमार इंसानों के बीच एक तू ही तो साबुत है।"6

प्रगतिवादी सोच रखनेवाली मैना अपने समाज से अत्यधिक प्रेम करती है ।इसलिए वह अविनाश शर्मा के जनमोर्चा से मिलकर सबको रोजगार मिले ऐसी जनखदान का निर्माण करती है।
संजीव ने मैना के माध्यम से समाज की स्त्री वर्ग को प्रतिकूल व्यवस्था को परिवर्तित करने की प्रबल प्रेरणा देने का अमूल्य कार्य किया है। मैना एक साधारण अनपढ़ आदिवासी स्त्री है, जो अपनी सोच और विचारों से पुरुषवादी समाज व्यवस्था से संघर्ष कर असामान्य बन जाती है। मैना स्वाभिमानी एवं संघर्ष करने वाली स्त्री हैं। मैना फैक्ट्री मालिक को साथ देने वाले अपने पति एवं पिता के खिलाफ संघर्ष करती है। मैना के पिता अपनी जमीन महेंद्र बाबू को तेजाब की फैक्ट्री शुरू करने के लिए देते हैं।गांव के लोगों में सचेतना लाने के लिए मैना गांव वालों के साथ मिलकर आंदोलन करती है। उसका पति भी उसका साथ नहीं देता। मैना का संघर्ष जेल से छूटने के बाद भी चलता रहता है वह जनमोर्चा के अविनाश शर्मा आदि के साथ मिलकर फैक्ट्री के विरोध में लड़ती हैं अविनाश शर्मा और मैना सैकड़ों आदिवासियों की मदद से को-आपरेटिव बनाते हैं। कठोर मेहनत श्रद्धा संगठन के बल पर कुछ ही दिनों में जन खदान ऊंचाई पर पहुंचती है। मैना एक स्वाभिमानी, विद्रोहिणी नारी के रूप में चित्रित हुई है. अपने आदिवासी भाई बहनों के लिए संघर्ष करती हुई नजर आती है। वह अन्याय के खिलाफ आवाज उठाकर आदिवासियों को न्याय दिलाना चाहती है। मैना अस्मिता और स्वाभिमान के लिए तलवार की 'धार' के समान तेजस्वीनी है। संजीव ने अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने की चिंगारी मैना के रूप में जलाई है। अविनाश शर्मा आदिवासियों को सचेत करते हुए कहते हैं, तो साथियों यह 'धार' ही हमारी शक्ति है और धार का बोथरा होना ही मौत है यहां- ही- नहीं जहां -जहां भी साम्यवादी सरकारें हैं यह उपमा लागू होती है।... चारों तरफ भेड़िए गुर्रा रहे हैं वह हमें खा जाने पर आमदा है लेकिन क्या हम उनके नापाक इरादे पूरे होने देंगे?नहीं। हरगिज़ नहीं इसलिए हमें धार की जरूरत है सतत आन से ताजा होती धार चाहे हमें कोई भी कुर्बानी क्यों न देनी पड़े।"(7)

निष्कर्ष:

आदिवासी चिंतन की दृष्टि से संजीव का 'धार' उपन्यास का अध्ययन करने पर हमारे सामने केन्द्रीय रूप में आदिवासियों का पीड़ित व शोषित रूप अंकित होता है। संजीव की गहरी संवेदनशीलता कि 'धार' मन को सहज ही छू लेती हैं ।वर्तमान समय में यदि देखा जाए तो आदिवासी समाज वह समाज है जो सबसे अधिक वंचित, उपेक्षित तथा अभावग्रस्त जीवन जी रहा है। उसमें चेतना तो आयी है, वह अपने अधिकारों के लिए संघर्ष तथा विद्रोह भी कर रहा है, किन्तु उसमें अधिक सफल नहीं हो पाया है, क्योंकि समाज के अन्य लोगों ने उन्हें सिर्फ और सिर्फ शोषण का शिकार बना रखा है। आलोच्य उपन्यास के माध्यम से संजीव ने आदिवासियों को सचेत कर संघर्ष करने की प्रेरणा प्रदान की है।

Scanned with CamScanner

संदर्भ सूचि : -

1. आदिवासी साहित्य विविध आयाम – संपा. डॉ. रमेश सम्भाजी कुरे – पृ० 210
2. संजीव, धार, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरा सं 2011 पृ० 54
3. संजीव, धार, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली,दूसरा सं 2011 पृ० 54
4. संजीव, धार, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली,दूसरा सं 2011 पृ० 58
5. संजीव, धार, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली,दूसरा सं 2011 पृ०63
6. संजीव, धार, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली,दूसरा सं 2011 पृ० 175
7. संजीव, धार, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली,दूसरा सं 2011 पृ० 157

RESEARCH JOURNEY

Scanned with CamScanner